अध्याय-21

पठित-अपठित गद्यांश

गद्य या पद्य का ऐसा अनुच्छेद जो पाठ्य-पुस्तक में समाहित नहीं किया गया हो या जिसे कभी पढ़ा न गया हो, अपठित कहा जाता है। यह अपठित यदि गद्य में है तो अपठित गद्यांश तथा काव्य में है तो अपठित पद्यांश या अपठित काव्यांश कहलाता है। इन दोनों ही प्रकार के अनुच्छेदों को सावधानीपूर्वक पढ़कर इनसे संबंधित प्रश्न करने को कहा जाता है। इसमें छात्रों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे इन पद्यावतरणों को तत्काल पढ़कर उनमें वर्णित उत्तर संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करें। इससे उनमें विषय बोधगम्यता तथा रचनात्मकता का विकास होता है। अपठित किसी विशेष क्षेत्र में न होकर कृषि, विज्ञान, कला, साहित्य, राजनीति, अर्थशास्त्र, पर्यावरण या किसी भी अन्य विषय पर आधारित हो सकता है।

अपठित से संबंधित सामान्य नियम–

1. प्रश्न में दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्व दो-तीन बार पढ़कर उसके केन्द्रीय भाव को चिहि्न्त करना चाहिए।
2. अनुच्छेद को पुनः पढ़कर उसके महत्त्वपूर्ण स्थलों को रेखांकित करना चाहिए।
3. शीर्षक का चुनाव करते समय संक्षिप्तता का ध्यान रखना चाहिए।
4. अपठित में पहले से रेखांकित किये गए वाक्यांशों का अर्थ तथा भाव सावधानीपूर्वक समझना चाहिए।
5. अपठित का सार लिखते समय भाषा अवतरण के अनुकूल हो तथा सारगर्भित हो।

अपठित गद्यांश-1

तुलसीदास भारत के श्रेष्ठ भक्त-कवि हैं। वे भक्ति-आन्दोलन के निर्माता हैं, वे उसी भक्ति-आंदोलन की उपलब्धि हैं। उनके साहित्य का सामाजिक महत्व भक्ति आन्दोलन के सामाजिक महत्व पर निर्भर है, उससे पूरी तरह संबद्ध है।

इस भक्ति-आंदोलन की पहली विशेषता यह है कि वह अखिल भारतीय है। देश और काल की दृष्टि से ऐसा व्यापक सांस्कृतिक आन्दोलन संसार में दूसरा नहीं है। ईसा की दूसरी शताब्दी में ही आंध्र प्रदेश में कृष्णोपासना के चिह्न पाये जाते हैं। गुप्त-सम्राटों के युग में विष्णु नारायण-वासुदेव की उपासना ने अखिल भारतीय रूप ले लिया। पाँचवीं शताब्दी से लेकर नवीं शताब्दी तक तमिलनाडु भक्ति-आंदोलन का प्रमुख स्रोत रहा। आलवार संतों की कीर्ति सारे भारत में फैल गयी। कश्मीर में ललदेद, तमिलनाडु में आंदाल, बंगाल में चण्डीदास, गुजरात में नरसी मेहता-भारत के विभिन्न प्रदेशों में भक्त-कवि लगभग डेढ़ हजार वर्ष तक जनता के हृदय को अपनी अमृत वाणी से सींचते रहे।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक दीजिए।

प्र. 2. भक्ति आन्दोलन की कोई एक विशेषता लिखिए।

प्र. 3. आन्ध्र प्रदेश में कृष्णोपासना के संकेत कब मिले?

प्र. 4. पाँचवीं से नवीं शताब्दी के बीच भक्ति आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र रहा था।

प्र. 5. चंडीदास व नरसी का संबंध भारत के किस प्रांत से रहा?

अपठित गद्यांश–2

रामायण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें एक ही घर की कथा वृहद्–रूप से वर्णन की गई है। पिता–पुत्र में, भाई–भाई में, पति–पत्नी में जो धर्म–बन्धन होता है–जो प्रीति और भक्ति का सम्बन्ध होता है वह इसमें इतना ऊँचा दर्शाया गया है कि सहज ही में महाकाव्य के अनुरूप कहा जा सकता है। अन्य महाकाव्यों का गौरव उनमें वर्णन किये हुए विजय, शत्रु दमन और दो विरोधी पक्षों का आपस में रक्तपात आदि घटनाओं के वर्णन से होता है परन्तु रामायण की महिमा राम–रावण के युद्ध के कारण नहीं। इस युद्ध–घटना का वर्णन तो केवल राम और सीता के उज्ज्वल दाम्पत्य प्रेम का दर्शन कराने के लिये है। रामायण में केवल यही दिखाया गया है कि पुत्र का पिता की आज्ञा का पालन, भाई का भाई के लिये आत्म–त्याग, पत्नी की पति के प्रति निष्ठा और राजा का प्रजा के प्रति कर्त्तव्य कहाँ तक हो सकता है। किसी देश के महाकाव्य में इस प्रकार व्यक्ति विशेष का पारिवारिक सम्बन्ध इतना वर्णनीय विषय नहीं समझा गया है।

पूर्वोक्त बातों से केवल कवि का ही परिचय नहीं मिलता, सारे भारतवर्ष का परिचय मिलता है। इससे यह मालूम होता है कि भारत में गृह और गृह–धर्म कितने महान समझे जाते थे। इस महाकाव्य में यह बात स्पष्टतापूर्वक सिद्ध होती है कि हमारे देश में गृहस्थाश्रम का स्थान कितना ऊँचा है। गृहस्थाश्रम हमारे ही सुख और सुभीते के लिये नहीं; गृहस्थाश्रम सारे समाज को धारण करने वाला है। वह मनुष्य के यथार्थ भावों को दीप्त करता है। वह भारतवर्षीय समाज की नींव है। रामायण उसी गृहस्थाश्रम के महत्त्व को दिखाने वाला महाकाव्य है।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्र. 2. गद्यांश के आधार पर किन दो प्रमुख गुणों के कारण रामायण को महाकाव्य के अनुरूप कहा जा सकता है?

प्र. 3. राम–रावण का युद्ध किस पक्ष को दर्शाता है?

प्र. 4. रामायण में भारतीय जीवन की किस विशेषता को प्रमुखता से वर्णित किया गया है।

प्र. 5. भारतवर्षीय समाज की नींव किसे माना गया है।

अपठित गद्यांश-3

वे सिद्ध-वाणी के अत्यन्त सरस हृदय कवि थे। इससे एक ओर तो उनकी लेखनी से शृंगार रस के ऐसे रसपूर्ण मर्मस्पर्शी कवित्त-सवैये निकलते थे, जो उनके जीवन-काल में ही इधर-उधर लोगों के मुँह से सुनाई पड़ने लगे थे, दूसरी ओर स्वदेशप्रेम से भरे हुए उनके लेख और कविताएँ चारों ओर देश के मङ्गल का मन्त्र-सा फूँकती थीं। अपने सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के बल से एक ओर तो वे पद्माकर और द्विजदेव की परम्परा में दिखाई पड़ते थे, दूसरी ओर बंगदेश के मधुसूदनदत्त और हेमचन्द की श्रेणी में; एक ओर तो राधा-कृष्ण की भक्ति में झूमते हुए 'नई भक्तमाल' गूँथते दिखाई देते थे, दूसरी ओर टीकाधारी बगुला भगत की हँसी उड़ाते तथा स्त्री-शिक्षा, समाज-सुधार आदि पर व्याख्यान देते पाए जाते थे। प्राचीन और नवीन का यही सुन्दर सामंजस्य भारतेन्दु की कला का विशेष माधुर्य है। साहित्य के एक नवीन युग के प्रवर्त्तक के रूप में खड़े होकर उन्होंने यह भी प्रदर्शित किया कि नए-नए या बाहरी भावों को पचाकर इस ढंग से मिलाना चाहिए कि वे अपने ही साहित्य के विकसित अङ्ग से लगें। प्राचीन और नवीन के उस संधिकाल में जैसी शीतल और मृदुल कला का संचार अपेक्षित था, वैसी ही शीतल और मृदुल कला के साथ भारतेन्दु का उदय हुआ; इसमें सन्देह नहीं।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक बताइये?

प्र. 2. भारतेंदु के काव्य की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

प्र. 3. भारतेंदु की कला का विशेष माधुर्य क्या है?

प्र. 4. भारतेंदु का उदय किस समय हुआ।

अपठित गद्यांश-4

भारतीय भाषाओं और साहित्य में अग्रस्थान ग्रहण करने का हिन्दी ने आग्रह नहीं किया। यह इन सबकी संयोजक शक्ति के रूप में बनी रहना चाहती है। हिन्दी का यह विनय हिन्दी के हीन भाव के कारण नहीं है। अब वह समय आ गया है जब हम हिन्दी की संतानों को क्षमा-प्रार्थना के स्वर में नहीं, सत्य स्थापना के स्वर में यह दृढ़तापूर्वक कहना चाहिए कि राज-भाषा होने के लिए हिन्दी अब अपने को अपमानजनक शर्तों पर बेचने को तैयार नहीं है। राजभाषा का पद हिन्दी के लिए बहुत छोटा पद है। हिन्दी का साहित्यकार राजस्तुति को, प्राकृतजन के गुणगान को हमेशा तुच्छ और हेय कविकर्म मानता आया है। वह हमेशा से तेज का उपासक रहा है–वह तेज चाहे छोटे-छोटे से आदमी में हो पर हो। वह ऐसा कि उसमें समग्र विश्व का तेज प्रतिबिंबित हो। हम शासन के दबाव के कारण नहीं, अपने दायित्व के बोध के कारण समग्र भारत के जीवन के संस्पर्श से हिन्दी को पुलकित कर रहे हैं और करेंगे। प्रकाश की किरण विदेश के किसी भी कौने से आये उसे ग्रहण करेंगे, पर उसके साथ ही हम प्रत्येक ऐसी बाधा का या दीवार का भंजन भी करेंगे जो हमें घेरती हों, जो हमारे प्राणों को बन्धन में डालती हैं तथा जो हमारे प्रकाश रूँधती हों।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक लिखिए?

प्र. 2. हिन्दी किस रूप में बनी रहना चाहती है?

प्र. 3. हिन्दी का साहित्यकार किसे तुच्छ कविकर्म मानता आया है।

प्र. 4. हिन्दी के रचनाकार किस प्रकार के तेज का उपासक रहा है?

अपठित पद्यांश-1

भू-लोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ
सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषिभूमि है, वह कौन? भारतवर्ष है।।
हाँ, वृद्ध भारतवर्ष ही संसार का सिरमौर है,
ऐसा पुरातन देश कोई विश्व में क्या और है?
भगवान की भव-भूतियों का यह प्रथम भण्डार है।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक दीजिए?

प्र. 2. प्रथम दो पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

प्र. 3. कवितांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

अपठित पद्यांश-2

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनन्दन किया और पहनाया हीरक हार।।
जागे हम, लगे जगाने विश्व लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।।
विमल वाणी ने वीणा ली कमल-कोमल कर में सप्रीत।
सप्त स्वर सप्तसिन्धु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत।।
बचा कर बीज-रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत।
अरुण-केतन लेकर निज हाथ वरुण पथ में हम बढ़े अभीत।।

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. काव्यांश का शीर्षक लिखिए।

प्र. 2. प्रथम चार पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

प्र. 3. कविता के अंश का भावार्थ लिखिए।

अपठित पद्यांश-3

नींद कहाँ उनकी आँखों में जो धुन के मतवाले हैं?
गति की तृषा और बढ़ती पड़ते पद में जब छाले हैं।
जागरूक की जय निश्चित है, हार चुके सोने वाले!
लेना अनल-किरीट भाल पर जो आशिक होने वाले!

अभ्यास प्रश्न–

प्र. 1. उपर्युक्त पद्यांश का शीर्षक बताइए?

प्र. 2. अनल-किरीट से क्या अभिप्राय है?

प्र. 3. आखिरी चार पंक्तियों की व्याख्या कीजिए।

प्र. 4. कविता के अंश का भावार्थ लिखिए।